Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art
Vol. VI 2015
ISSN (P) : 0976-7444
(e) : 2395-7247

संगीत भगवान की अपार कृपा

14

डॉ0 ओम् प्रकाश चौहान*

संगीत का जन्म कब और कैसे हुआ यह कहना उतना ही कठिन है जितना मानव की उत्पति के विषय में। दोनों की सृष्टि के सम्बन्ध में अनेकों किवदंतियां एवं धारणाएं प्रचलित है। बुद्धिजनों का एक बड़ा वर्ग मानता है कि चूंकि संगीत का मुख्य घटक नाद है और नाद ब्रह्माण्ड में विद्यमान ओम्कार का परिणाम है इसीलिए संगीत की उत्पति भी ओम् से ही समझनी चाहिए। लेकिन संगीत केवल नाद ही नहीं अपितु नाद का एक परिश्कृत रूप है इसीलिए नाद के व्यवस्थित रूप का प्रयोग मानव की प्रगति के साथ– साथ होता रहा जिसके फलस्वरूप संगीत कला का जन्म हुआ, ऐसा मेरा विचार है। यदि शास्त्रों पर नज़र डालें तो शास्त्रकारों ने संगीत का सीधा सम्बन्ध भगवान एवं देवी– देवताओं से जोड़ा है। भगवान शिव को इस कला का जन्म दाता समझा जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है कि संगीत का जन्म अपने अर्न्तमन की भावनाओं को व्यक्त करने हेतु हुआ होगा। भिन्न–भिन्न प्रकार की भावनाओं को आदिमानव ने अलग–2 वाणी से प्रकट किया होगा एवं कालान्तर में यह नाद व्यवस्थित हुआ और संगीत के रूप में विकसित हुआ। यह भी सर्व विदित है कि इस प्रकृति में इतना कुछ विद्यमान है कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हम ने प्रकृति से ही तो सब सीखा है। प्रकृति में उपस्थित विभिन्न प्रकार के नादों का अनुसरण कर संगीत कला का विकास हुआ होगा। मेरा यह मानना है कि उपरोक्त सभी कारणों के संयोग से संगीत का सृजन हुआ और मानव की विकास यात्रा के साथ–2 परिष्कृत होता गया। इसमें काल दर काल नए–2 आयाम जुड़ते रहे और यह मानव जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया। जीवन के हर क्षण में यह मानव के साथ किसी न किसी रूप में उपस्थित रहा। मानव और संगीत का यह अटूट रिश्ता जन्म से मरण तक यूं ही अनवरत चलता रहता है।

संगीत रोज़मर्रा की ज़िदगी में जीने के लिए आवश्यक अन्य सभी ज़रूरी चीजों की तरह शामिल है। यह एक परमानन्द की वस्तु है जो किसी बन्धन किसी सीमा को नही मानती। इस पर राजा से रंक तक का समान अधिकार है। विद्वानों और मनिषियों ने यहां तक माना है कि संगीत के बिना मनुष्य, मनुष्य ही नहीं। भर्तृहरि ने कहा हैः

साहित्य संगीत कला विहिनः ।
साक्षात् पशु पुच्छविषाणः हीनः।।

संगीत विश्व की सार्वभौम वाणी है जो स्वर लय के सहारे समस्त विष्व की आत्माओं को एक सूत्र में बांधे रखने में सक्षम है। भारतीय संगीत के द्वितीय पक्ष सुगम संगीत ने राष्ट्रीय

**एसो0 प्रोफे0, संगीत विभाग, राज0 स्ना0 महाविद्यालय, राजगढ़, हि0प्र0*

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

एकता को सुदृढ़ करने में अहम भूमिका निभाई है। सुगम संगीत से अभिप्राय संगीत के उस सरल सुबोध व सुवाच्य रूप से है जिसमें नियमों का अधिक बन्धन न हो। शास्त्रीय संगीत में शास्त्रोक्त नियमों का बन्धन, शब्दों व काव्य का अभाव है। शास्त्रीय संगीत का मुख्य लक्ष्य स्वरों के माध्यम से श्रोताओं के मन में भाव उत्पन्न करना है परन्तु सुगम संगीत में भाषा का प्राबल्य होने के कारण यह अपने उद्देश्य/लक्ष्य को प्रभावी ढंग से प्राप्त कर सकता है। शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा सुगम संगीत जनमानस में ज्यादा सुग्राह्य तथा लक्ष्य प्राप्ति में अधिक प्रभावी है। सुगम संगीत के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न गायन शैलियों के द्वारा राष्ट्रीय एकता को बहुत बल मिलता है। भक्ति संगीत धर्म की नींव पर विराजमान है और भारतीय परिवेश में प्राचीन समय से ही धर्म को जीवन का आधार स्तम्भ स्वीकारा गया है। प्रत्येक धर्म ने ईश्वरोपासना को मनुष्य की मुक्ति का मार्ग बतलाया है। सभी धर्मो के सन्त महात्माओं ने संगीत (नाद) को परमपवित्र, कल्याणकारी तथा ईश्वर प्राप्ति का प्रमुख साधन माना है।

जहां संगीत एक ओर जन रंजन करता है वहीं इसका सम्बन्ध अध्यात्म से भी है। प्राचीन ऋषिमुनियों के अनुसार संगीत सांसारिक दुखो से मुक्ति प्रदान कराने और ब्रह्म से मिलाने वाला मार्ग है। सच्चे संगीत साधक परमानन्द प्राप्त कर अलौकिक सुख की प्राप्ति करते हैं। सूर, तुलसी, मीरा, आदि भक्त कवियों के गेय पदों में जीवन की जिस गंभीरता व अलौकिक आनन्द का परिचय संगीत द्वारा मिलता है उससे सभी परिचित है। दिन भर की थकान के बाद जब व्यक्ति संगीत श्रवण करता है तो उसकी थकान उन स्वर लहरियों में डूब जाती है। संगीत मानव की सुन्दर कल्पनाओं का आधार है यह यक सुखद अनुभूति है जिसका बोध प्रत्येक प्राणीं को होता है। संगीत जीवन को सतत प्रवाह प्रदान करता है जो सदैव कल्याणकारी भावना से अभिप्रेरित होता है।

धार्मिक अनुष्ठानों में वेद मन्त्रोच्चारण हो, मंदिरों में कीर्तन सभाएं हों, योगिक चेतनां शिविरों मे वाद्यों की स्वर लहरियां या गायन हों, प्रत्येक संप्रदायों के अपने दैविक अनुष्ठानों में देवी देवताओं के आहवान के लिए वाद्य यंत्रों एवं मंत्रोच्चारण (देव स्तुति गीतों) का प्रयोजन हो, गुरुद्वारों में शबद कीर्तन हो, गिरजा घरों में प्रार्थनाएं तथा घण्टों की मधुर ध्वनी हो, मस्ज़िदों में अज़ान अता करना हो ये सभी सांगीतिक क्रियाएं अराधना तथा अध्यात्म के लिए की जाती है। यह आत्म और परमात्म के मूल तत्व भी है तथा जीवन की सही दिशा भी इन्ही पर निर्भर मानी जाती है। संगीत विश्व शान्ति, विश्व भाईचारा, अहिंसा, सदभावना एवं मानवता का संदेश पहुंचाने का सबसे सशक्त तथा कारगर साधन है। इसी प्रयोजन से अनेकों कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं।

बौध धर्म में जहां भगवान बुद्ध ने ज्ञान का उपदेश दिया वहीं दूसरी ओर उस ज्ञान से संगीत का परिष्कार भी हुआ। भगवान बुद्ध के विचारों को गीतों के माध्यम से गा– गा कर जन मानस तक पहुंचाया गया। **इस्लाम धर्म** में सूफ़ी साधकों ने अल्लाह से प्रेम करने का मार्ग संगीत ही चुना है। सुफ़ियों की काफ़ियां इसका एक उदाहरण है जिसमे की ईश्वर प्रेम वर्णित रहता है। **सिक्ख धर्म** में तो संगीत का विशेष महत्व है। इस धर्म के प्रथम गुरू गुरूनानक देव

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

जी का कीर्तन आज भी प्रचलित है। गुरू ग्रंथ साहिब में तो अनेकों रागों का प्रयोग बताया गया है। गुरूद्वारों में संगीताधारित गुरूवाणी के पाठ निरंतर सुनाई पड़ते हैं।

संस्कार,पर्व एवं त्यौहार किसी भी राश्ट्र के समाज का आईना होते हैं और ये संगीत के बिना अपूर्ण है। संगीत के बिना इनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये सीधे तौर पर ही हमारी ज़िन्दगी से जुड़े रहते है। हिन्दु धर्मानुसार जीवन के 16 संस्कार माने गए हैं। इन्हीं संस्कारों द्वारा हमारा पूरा जीवन संचालित होता है। इन 16 संस्कारों का प्रारम्भ और अन्त संगीत द्वारा ही होता है। जन्म से मरण तक मानव और संगीत का अटूट सम्बन्ध रहता है। जन्म, विवाह, समारोह, पर्व, त्यौहार, भजन–कीर्तन आदि समस्त अनुश्ठानों का मुख्य घटक संगीत ही है। संगीत की विभिन्न विधाओं एवं षैलियों का अनुश्ठान यथा स्थिति–समय एवं यथा स्थान पर किया जाता है। हर अवसर, ऋतु एवं पर्व का गीत संगीत अलग–अलग है। होरी, कजरी, चैती के बिना उतर प्रदेश, मांड रहित राजस्थान, गरबा रहित गुजरात, भंगड़ा, गिद्दा के बिना पंजाब एवं हरियाणा, बिहू के बिना असम, लावणी के बिना महाराष्ट्र तथा नाटी के बिना हिमाचल प्रदेष के जन मानस की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। ये समस्त शैलियां यहां के जन जीवन के चित्रण को उद्धृत करती है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में विभिन्न काव्य रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को देष के प्रत्येक आंचल में पहुँचाने का श्रेय संगीत को ही जाता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना, स्वतन्त्रता प्राप्ति का संकल्प, कुरीतियों का उन्मूलन, अन्याय व शोषण का विरोध इन रचनाओं की प्रमुख प्रवृत्तियां व सार रहे है। कविता उच्चारण अर्थात् भावानुकूल स्वरों के प्रयोग से उसके भाव की अभिव्यक्ति सशक्त हो पाती है।

यह प्रमाणित सत्य है कि संगीत से मानव मन पर सकारात्मक असर पड़ता है। यह मानव मन के समस्त विकारों की निवृति का एक सशक्त माध्यम है। तनाव सभी बिमारियों का मुख्य कारक है। तनाव का सीधा सम्बन्ध हमारे मन–मस्तिष्क से है। मानसिक व्याधियों को सांगीतिक स्वरलहरियों के माध्यम से व्यवस्थित किया जा सकता है। तनाव रहित जीवन केवल संगीत से ही संभव है। आर्युवेदानुसार वात्, कफ़ व पित में संतुलन प्रदान करने में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। संगीत शारीरिक रूप से स्वस्थ रखनें में भी कारगर सिद्ध हुआ है। वर्तमान में शरीर को चुस्त–दरुस्त रखने के लिए लाखों लोग नृत्य संगीत का सहारा ले रहे हैं। नृत्य को एक उत्तम व्यायाम की श्रेणी में रखा गया है।

आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में उच्च अध्ययन संस्थानों के प्रशासकों ने एक मत से स्वीकारा है कि संगीत व संस्कृत विषय में अध्ययनरत शिक्षार्थी अधिक विवेकशील, संवेदनशील, संतुलित बुद्धि और अनुशासन प्रिय होते है। इस दृष्टि से यदि समस्त शिक्षण संस्थानों में संगीत, संस्कृत व योग को शिक्षा का अनिवार्य अंग बना दिया जाए तो भावनात्मक एकता कायम की जा सकती है। संगीत के मार्मिक स्वरों के आकर्शण से विद्यार्थी का मानसिक तनाव कम हो सकता है।

सारांश यह है कि मनुष्य और संगीत का सम्बन्ध अटूट है। संगीत की विशिष्ट विशेषता यह है कि यह किसी भी समाज के धर्म एवं संस्कृति का एक मज़बूत स्तम्भ होता है। मनोरंजन

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

के रूप में जहां यह सदैव मानव के साथ रहा है वहीं भावनाएं अथवा संदेश व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। संगीत एक औषधि है निदान है। संगीत मानव जीवन में परमात्मा को प्राप्त करने का सबसे सहज व सरल रास्ता है व समस्त संसार को अध्यात्मिक व संसारिक सुख प्राप्त करने का मार्ग है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *'सरस' संगीत, डॉ. प्रदीप कुमार भूपेंद्रनाथ दीक्षित 'नेहरंग', पृ. 112*
2. *मूर्तिकला का इतिहास, एस.एम.असगर अली कादरी, पृ. 55*
3. *भारतीय सौंदर्यशास्त्रा का तात्त्विक विवेचन एवं ललित कलाएं, डॉ. रामलखन शुक्ल, पृ. 194*
4. *पं. शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, व्याख्या और अनुवाकर्त्री सुभद्रा चौधरी, पृ. 12*
5. *भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 204*
6. *भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 121*
7. *भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 116*
8. *भारतीय संगीत–शिक्षा और उद्देश्य, डॉ. पूनम दत्ता, पृ. 113*
9. *संगीत (पत्रिका), जुलाई 1993, पृ. 4*

© *2015 Journal Anu Books.* Authors are responsible for any plagiarism issues.